



पत्र-पुष्प



निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनों प्रति मधुर याद पत्र (18-05-15)

परमप्यारे अव्यक्त बापदादा के अति लाडले, सदा सहज राजयोगी जीवन द्वारा श्रेष्ठ कर्मों की कला सीखने और सिखाने वाले, निमित्त टीचर्स बहिनें तथा सर्व देश विदेश के ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें, ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - हम सभी राजयोग के प्रकम्पनों द्वारा प्रकृति सहित मानव मात्र को सुख शान्ति की अंचली देने की सेवा करते ही रहते हैं। अपने विद्यालय में 1978 से हर मास के तीसरे रविवार को “अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस” मनाया जाता है, जिसमें देश विदेश के हर सेवाकेन्द्र पर हजारों भाई बहिनें स्व कल्याण एवं विश्व कल्याण हेतु संगठित रूप में राजयोग का अभ्यास करते हैं।

आप सबने समाचार सुना होगा कि युनाईटेड नेशन द्वारा पूरे विश्व में 21 जून को “अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस” मना रहे हैं। लेकिन योग के नाम से तो लोग अभी तक अनेक प्रकार के हठयोग, प्राणायाम आदि ही करते आये हैं। हम सबको तो स्वयं योगेश्वर पिता परमात्मा ने भारत का प्राचीन, सर्वश्रेष्ठ योग “राजयोग” सिखाया है, जिस योग से आत्मा अपनी स्वराज्य अधिकारी स्थिति को प्राप्त कर कर्मेन्द्रिय जीत, विकर्माजीत बनती है तथा मन-बुद्धि की एकाग्रता से सर्वोच्च सत्ता परमात्मा पिता से अपना सम्बन्ध जोड़कर विश्व में शान्ति सुख के प्रकम्पन फैलाती है। इस सर्वश्रेष्ठ राजयोग का अधिक से अधिक प्रचार प्रसार करने का यह बहुत अच्छा अवसर है।

अतः राय है कि देश विदेश के अपने सभी सेवाकेन्द्रों/उपसेवाकेन्द्रों तथा बीके पाठशालाओं में 21 जून 2015 को तो यह दिवस धूमधाम से मनायें ही लेकिन यदि सम्भव हो तो 3 दिन या 7 दिन के लिए इस दिवस को सभी स्थानों पर विशेष मनाया जाए, जिसमें अपने बी.के. भाई बहिनें के साथ-साथ, नगर के गणमान्य व्यक्तियों को, सांसद, विधायक तथा अन्य मंत्रीगणों आदि को भी आमन्त्रित किया जाए और उन्हें राजयोग शिविर के माध्यम से योग की गहन अनुभूतियां कराई जाएं तथा राजयोग से होने वाली उपलब्धियों के बारे में अवगत कराया जाए। यह भी परमात्म प्रत्यक्षता का बहुत अच्छा अवसर है। इसके साथ-साथ सभी बी.के. भाई बहिनें संगठित रूप में विशेष 21 जून को अपने देश के समय अनुसार सायं 6.30 से 7.30 बजे तक विशेष प्रकृति सहित पूरे विश्व को शान्ति शक्ति के प्रकम्पन फैलाने की सेवा करें। इतनी पवित्र आत्माओं के श्रेष्ठ संकल्पों की शक्ति कोई न कोई महान कार्य अवश्य सम्पन्न करेगी। राजयोग की सहज विधि एवं सिद्धि के विषय पर एक सुन्दर लेख भी साथ में आपके पास भेजा जा रहा है जो अपने स्थानीय समाचार पत्रों में प्रकाशित कर सकते हैं।

बाकी इस वर्ष शान्तिवन में हुई वार्षिक मीटिंग का समाचार आप सबने पढ़ा ही होगा। मीटिंग में यही सुझाव निकला कि इस पूरे वर्ष को “सहज राजयोग द्वारा सुखी एवं स्वस्थ समाज” के रूप में मनाया जाए। साथ-साथ स्व-उन्नति और सेवाओं के भी बहुत अच्छे प्लैन्स बने हैं। बाबा कहते बच्चे जो करना है अब कर लो, कल किसने देखा। जो भी प्लैन बने हैं, प्लेन स्थिति में रह सभी प्लैन्स प्रैक्टिकल में लाने हैं। अपनी दिव्यता सम्पन्न जीवन से प्यारे बापदादा को प्रत्यक्ष करना है।

बाकी आप सब खुशमौज में होंगे। अभी मैं 4 सप्ताह के लिए लण्डन अमेरिका तरफ सेवा पर हूँ,

10 जून तक मधुवन पहुंच जाऊंगी। अच्छा -

सभी को बहुत-बहुत याद...

ईश्वरीय सेवा में,

बी.के.जानकी



ये अव्यक्त इशारे



तपस्या वर्ष (जून 2015) के लिए विशेष होम वर्क

A) योग के प्रयोग द्वारा सिद्ध स्वरूप बनो

1) जैसे साइंस प्रयोग में आती है तो समझते हैं कि साइंस अच्छा काम करती है, ऐसे साइलेन्स की शक्ति का प्रयोग करो, इसके लिए एकाग्रता का अभ्यास बढ़ाओ। एकाग्रता का मूल आधार है - मन की कन्ट्रोलिंग पावर, जिससे मनोबल बढ़ता है।

2) आप अपनी आत्मिक दृष्टि से अपने संकल्पों को सिद्ध कर सकते हो। वह रिद्धि सिद्धि है अल्पकाल, लेकिन याद की विधि से संकल्पों और कर्मों की सिद्धि है अविनाशी। वह रिद्धि सिद्धि यूज करते हैं और आप याद की विधि से संकल्पों और कर्मों की सिद्धि प्राप्त करो।

3) अभ्यास की प्रयोगशाला में बैठ, योग का प्रयोग करो तो एक बाप का सहारा और माया के अनेक प्रकार के विघ्नों का किनारा अनुभव करेंगे। अभी ज्ञान के सागर, गुणों के सागर, शक्तियों के सागर में ऊपर-ऊपर की लहरों में लहराते हो इसलिए अल्पकाल की रिफ्रेशमेंट अनुभव करते हो। लेकिन अब सागर के तले में जाओ तो अनेक प्रकार के विचित्र अनुभव कर रत्न प्राप्त करेंगे।

4) योग की शक्ति जमा करने के लिए कर्म और योग का बैलेंस और बढ़ाओ। कर्म करते योग की पावरफुल स्टेज रहे-इसका अभ्यास बढ़ाओ। जैसे सेवा के लिए इन्वेन्शन करते जैसे इन विशेष अनुभवों के अभ्यास के लिए समय निकालो और नवीनता लाकरके सबके आगे एकजाम्पुल बनो।

5) वर्तमान समय के प्रमाण सर्व आत्मायें प्रत्यक्षफल अर्थात् प्रैक्टिकल प्रूफ देखने चाहती हैं। तो तन, मन, कर्म और सम्पर्क-सम्बन्ध में साइलेन्स की शक्ति का प्रयोग करके देखो। शान्ति की शक्ति से आपका संकल्प वायरलेस से भी तेज किसी भी आत्मा प्रति पहुंच सकता है। इस शक्ति का विशेष यंत्र है 'शुभ संकल्प' इस संकल्प के यंत्र द्वारा जो चाहे वह सिद्धि स्वरूप में देख सकते हो।

6) शान्ति की शक्ति का प्रयोग पहले स्व के प्रति, तन की व्याधि के ऊपर करके देखो। इस शक्ति द्वारा कर्मबन्धन का रूप, मीठे सम्बन्ध के रूप में बदल जायेगा। यह कर्मभोग, कर्म का कड़ा बन्धन साइलेन्स की शक्ति से पानी की लकीर मिसल अनुभव होगा। भोगने वाला नहीं, भोगना भोग रही हूँ - यह नहीं लेकिन साक्षी दृष्टा हो इस हिसाब-किताब का दृश्य

भी देखते रहेंगे।

7) योग का प्रयोग अर्थात् अपने शुद्ध संकल्पों का प्रयोग तन पर, मन पर, संस्कारों पर अनुभव करते आगे बढ़ते जाओ, इसमें एक दो को नहीं देखो। यह क्या करते, यह नहीं करते, पुराने करते वा नहीं करते, यह नहीं देखो। पहले मैं इस अनुभव में आगे आ जाऊं क्योंकि यह अपने आन्तरिक पुरुषार्थ की बात है। जब ऐसे व्यक्तिगत रूप में इसी प्रयोग में लग जायेंगे, वृद्धि को पाते रहेंगे तक एक एक के शान्ति की शक्ति का संगठित रूप में विश्व के सामने प्रभाव पड़ेगा।

8) जैसे वाणी की प्रैक्टिस करते-करते वाणी के शक्तिशाली हो गये हो, ऐसे शान्ति की शक्ति के भी अभ्यासी बनते जाओ। आगे चल वाणी वा स्थूल साधनों के द्वारा सेवा का समय नहीं मिलेगा। ऐसे समय पर शान्ति की शक्ति के साधन आवश्यक होंगे क्योंकि जितना जो महान् शक्तिशाली होता है वह अति सूक्ष्म होता है। तो वाणी से शुद्ध-संकल्प सूक्ष्म हैं इसलिए सूक्ष्म का प्रभाव शक्तिशाली होगा।

9) जहाँ वाणी द्वारा कोई कार्य सिद्ध नहीं होता है तो कहते हो - यह वाणी से नहीं समझेंगे, शुभ भावना से परिवर्तन होंगे। जहाँ वाणी कार्य को सफल नहीं कर सकती, वहाँ साइलेन्स की शक्ति का साधन शुभ संकल्प, शुभ भावना, नयनों की भाषा द्वारा रहम और स्नेह की अनुभूति कार्य सिद्ध कर सकती है।

10) कोई भी खजाना कम खर्च करके अधिक प्राप्ति कर लेना, यही योग का प्रयोग है। मेहनत कम सफलता ज्यादा इस विधि से प्रयोग करो। जैसे समय वा संकल्प श्रेष्ठ खजाने हैं, तो संकल्प का खर्च कम हो लेकिन प्राप्ति ज्यादा हो। जो साधारण व्यक्ति दो चार मिनट संकल्प चलाने के बाद, सोचने के बाद सफलता या प्राप्ति कर सकता है वह आप एक दो सेकेण्ड में कर सकते हो, इसको कहते हैं कम खर्चा बाला नशीन। खर्च कम करो लेकिन प्राप्ति 100 गुणा हो इससे समय की वा संकल्प की जो बचत होगी वह औरों की सेवा में लगा सकेंगे, दान पुण्य कर सकेंगे, यही योग का प्रयोग है।

11) प्रयोगी आत्मा संस्कारों के ऊपर, प्रकृति द्वारा आने वाली परिस्थितियों पर और विकारों पर सदा विजयी होगी। योगी वा प्रयोगी आत्मा के आगे ये पांच विकार रूपी सांप गले की माला अथवा खुशी में नाचने की स्टेज बन जाते हैं।

12) जैसे साइन्स की शक्ति का प्रयोग लाइट के आधार पर होता है। अगर कम्प्यूटर भी चलता है तो कम्प्यूटर माइट है लेकिन आधार लाइट है। ऐसे आपके साइलेंस की शक्ति का भी आधार लाइट है। जब वह प्रकृति की लाइट अनेक प्रकार के प्रयोग प्रैक्टिकल में करके दिखाती है तो आपकी अविनाशी परमात्म लाइट, आत्मिक लाइट और साथ-साथ प्रैक्टिकल स्थिति लाइट, तो इससे क्या नहीं प्रयोग हो सकता!

13) जैसे कोई भी साइन्स के साधन को यूज करेंगे तो पहले चेक करेंगे कि लाइट है या नहीं है। ऐसे जब योग का, शक्तियों का, गुणों का प्रयोग करते हो तो पहले ये चेक करो कि मूल आधार आत्मिक शक्ति, परमात्म शक्ति वा लाइट (हल्की) स्थिति है? अगर स्थिति और स्वरूप डबल लाइट है तो प्रयोग की सफलता बहुत सहज कर सकते हो।

14) इस अभ्यास को शक्तिशाली बनाने के लिये पहले अपने पर प्रयोग करके देखो। हर मास वा हर 15 दिन के लिये कोई न कोई विशेष गुण वा कोई न कोई विशेष शक्ति का स्व प्रति प्रयोग करके देखो क्योंकि संगठन में वा सम्बन्ध-सम्पर्क में पेपर तो आते ही हैं तो पहले अपने ऊपर प्रयोग करके चेक करो, कोई भी पेपर आया तो किस गुण वा शक्ति का प्रयोग करने से कितने समय में सफलता मिली? जब स्व के प्रति सफलता अनुभव करेंगे तो आपके दिल में औरों के प्रति प्रयोग करने का उमंग-उत्साह स्वतः ही बढ़ता जायेगा।

15) योग का प्रयोग करने के लिए दृष्टि-वृत्ति में भी पवित्रता को और अण्डरलाइन करो। मूल फाउण्डेशन - अपने संकल्प को शुद्ध, ज्ञान स्वरूप, शक्ति स्वरूप बनाओ। कोई कितना भी भटकता हुआ, परेशान, दुःख की लहर में आये, खुशी में रहना असम्भव समझता हो लेकिन आपके सामने आते ही आपकी मूर्त, आपकी वृत्ति, आपकी दृष्टि आत्मा को परिवर्तन कर दे। यही है योग का प्रयोग।

B) अब योगबल द्वारा सफलता सम्पन्न बनी

1) जितना आप अपनी अव्यक्त स्थिति में स्थित होते जायेंगे उतना बोलना कम होता जायेगा। कम बोलने से ज्यादा लाभ होगा फिर इस योग की शक्ति से सर्विस स्वतः होगी। योगबल और ज्ञान-बल जब दोनों इकट्ठा होता है तो दोनों की समानता से सफलता मिलती है।

2) आगे चलकर अनेक प्रकार की परिस्थितियाँ आयेंगी उन्हें पार करने के लिए बहुत पावरफुल स्थिति चाहिए, अगर योगयुक्त होंगे तो जैसा समय वैसा तरीका टच होगा। अगर समय प्रमाण युक्ति नहीं आती है तो समझना चाहिए योगबल नहीं है। योगबल

वाली आत्मा को आने वाली परिस्थिति का पहले से ही पता होगा इसलिए वह योगयुक्त स्थिति में रह हर परिस्थिति को सहज पार कर लेंगे।

3) अब योगबल द्वारा आत्माओं को जगाने का कर्तव्य करो और सर्व शक्तिवान बाप की पालना का प्रत्यक्ष स्वरूप दिखाओ। साकार रूप द्वारा भी बहुत पालना ली और अव्यक्त रूप द्वारा भी पालना ली, अब अन्य आत्माओं की ज्ञान-योग से पालना करके उनको भी बाप के सम्मुख और समीप लाओ।

4) अब कोई भी आधार पर जीवन का आधार नहीं होना चाहिए अथवा पुरुषार्थ भी कोई आधार पर नहीं होना चाहिए, इससे योगबल की शक्ति के प्रयोग में कमी हो जाती है। जितना जो योगबल की शक्ति का प्रयोग करते हैं उतना उनमें वह शक्ति बढ़ती है। योगबल अभ्यास से बढ़ता है।

5) जैसे कोई भी बात सामने आती है, तो स्थूल साधन फौरन ध्यान में आ जाते हैं लेकिन स्थूल साधन होते हुए भी ट्रायल योगबल की ही करनी चाहिए। जैसे साइंस के यंत्रों द्वारा दूर का दृश्य सम्मुख अनुभव करते हो, वैसे साइलेंस की शक्ति से भी दूरी समाप्त हो सामने का अनुभव आप भी करेंगे और अन्य आत्मायें भी करेंगी, इसको ही योगबल कहा जाता है।

6) जैसे साइंस के साधन का यंत्र काम तब करता है जब उसका कनेक्शन मेन स्टेशन से होता है, इसी प्रकार साइलेंस की शक्ति द्वारा अनुभव तब कर सकेंगे, जबकि बापदादा से निरन्तर क्लीयर कनेक्शन और रिलेशन होगा।

7) योगबल जमा करने के लिए मन्सा बहुत शुद्ध और श्रेष्ठ चाहिए। मन्सा शक्ति ही सेफ्टी का साधन है। मन्सा शक्ति द्वारा ही स्वयं की अन्त सुहानी बनाने के निमित्त बन सकेंगे। नहीं तो साकार सहयोग समय पर सरकमस्टांस प्रमाण प्राप्त नहीं हो सकता। उस समय मन्सा शक्ति अर्थात् श्रेष्ठ संकल्प शक्ति, एक के साथ लाइन क्लीयर हो तब परमात्म शक्तियों का अनुभव कर सकेंगे।

8) व्यक्तियों को तो कोर्स करा देते हो लेकिन प्रकृति को वाणी की शक्ति से नहीं बदल सकते। उसके लिए योगबल चाहिए। योग में जब बैठते हो तो शान्ति सागर के तले में चले जाओ। संकल्प भी शान्त हो जाएं, बस एक ही संकल्प हो “आप और बाप” इसी को ही योग कहते हैं। ऐसा पावरफुल योग हो जो बाप के मिलन की अनुभूति के सिवाए और सब संकल्प समा जाएं, इससे योगबल जमा होगा और वह शक्ति अपने आप कार्य करेगी।

9) जैसे साइन्स का बल अन्धकार के ऊपर विजय प्राप्त कर रोशनी कर देता है। ऐसे योगबल सदा के लिये माया पर विजयी

बनाता है। स्वप्न में भी उन्हें माया हार नहीं खिला सकती। स्वप्न में भी कमजोरी नहीं आ सकती। योगबल से प्रकृति के तत्व भी परिवर्तन हो जाते हैं।

10) योगबल अर्थात् साइलेन्स की शक्ति - कम मेहनत, कम खर्च में बालानशीन कार्य करा सकती है। साइलेन्स की शक्ति - समय के खजाने में इकॉनामी करा देती है अर्थात् कम समय में ज्यादा सफलता पा सकते हो। यथार्थ इकॉनामी है - एकनामी बनना। एक का नाम सदा स्मृति में रहे। ऐसा एकनामी वाला इकॉनामी कर सकता है। जो एकनामी नहीं वह यथार्थ इकॉनामी नहीं कर सकता।

11) संगमयुग की विशेष शक्ति साइलेन्स की शक्ति है। संगमयुगी आत्माओं का लक्ष्य भी है कि अब स्वीट साइलेन्स होम में जाना है। शान्त स्वरूप रहना और सर्व को शान्ति देना - यही संगमयुगी आत्माओं का मुख्य लक्षण है। वर्तमान समय विश्व में इसी शक्ति की आवश्यकता है, इसको ही योगबल कहा जाता है।

12) योगबल वाली शान्त स्वरूप आत्मा एकान्तवासी होने के कारण सदा एकाग्र रहती है और एकाग्रता के कारण विशेष दो शक्तियाँ सदा प्राप्त होती हैं - एक परखने की और दूसरी निर्णय करने की। यही दो विशेष शक्तियाँ व्यवहार वा परमार्थ

दोनों की सर्व समस्याओं को हल करने का सहज साधन हैं।

13) परमार्थ मार्ग में विघ्न-विनाशक बनने के लिए योगयुक्त बनकर साइलेन्स की शक्ति द्वारा परखने और निर्णय करने की शक्ति को अपनाओ। यदि माया के भिन्न-भिन्न रूपों को परख नहीं सकेंगे तो उसे भगा भी नहीं सकेंगे क्योंकि परमार्थी बच्चों के सामने माया रॉयल ईश्वरीय रूप रच करके आती है जिसको परखने के लिए एकाग्रता की शक्ति चाहिए। एकाग्रता की शक्ति साइलेन्स की शक्ति से ही प्राप्त होती है।

14) अब चारों ओर सेवाकेन्द्र वा प्रवृत्ति के स्थान को शान्ति कुण्ड बनाओ, इसके लिए योग का किला मजबूत करो। किले को मजबूत करने का साधन है - प्युरिटी। जहाँ पवित्र आत्मायें रहती हैं वहाँ के वायब्रेशन विश्व की आत्माओं को शान्ति की अनुभूति कराते हैं। पवित्रता की शक्ति महान शक्ति है, उसकी महानता को जानकर मास्टर शान्ति देवा बनो। कैसी भी अशान्त आत्मा को शान्त स्वरूप, पवित्र स्वरूप में स्थित होकर शान्ति की किरणें दो तो अशान्त भी शान्त हो जायेंगे।

15) योगबल द्वारा मन्सा सेवा करने के लिए अपने मन-वचन-कर्म की पवित्रता से साइलेन्स की शक्ति को बढ़ाओ तब किसी भी आत्मा की वृत्ति, दृष्टि को परिवर्तन कर सकते हो। स्थूल में कितनी भी दूर रहने वाली आत्मा हो, उनको सम्मुख का अनुभव करा सकते हो, इसको ही योगबल कहा जाता है।

शिवबाबा याद है ?

ओम् शान्ति

7-4-15

मधुबन

“कोई भी बीमारी का कारण है - दुःख, चिन्ता, भय और बीमारी को भगाने का साधन है - सच्चाई, प्रेम, विश्वास” (दादी जानकी)

जो बात हमारे दिल में है सो मन में है, मन में है सो बुद्धि में है फिर चित्त में सारी स्मृति रह जाती है। बाकी सब बातें ऑटोमेटिक भूल जाती हैं। जैसे नष्टोमोहा, स्मृतिर्लब्धा वाला ही सदा प्रसन्नचित्त रह सकता है। अगर थोड़ा भी प्रश्न चित्त में है तो बुद्धि क्या काम करेगी? न ज्ञान, न योग, न धारणा। प्रश्नचित्त वाला बोलना बन्द नहीं करेगा, परन्तु प्रसन्न चित्त वाला बोलेगा नहीं। पा लिया जो पाना था, काम क्या बाकी रहा...। भगवानुवाच बच्चों प्रति सुना रहा है, छोटे हो बड़े हो पर छोटे बच्चे समान निश्चित है। समझदार और बुद्धिवान है निश्चय बुद्धि विजयंती है। छोटे बच्चे को कोई फिकर नहीं होता है। परन्तु ज्ञान-मार्ग में अमृत पिया है तो पिलाने का जी चाहता

है, बाबा पिला रहा है वैसे मैं भी पिलाऊं। अमृत पीते समय मैं बच्चा हूँ, जैसे अमृत मीठा होता है वैसे अमृत पीने से हमारा व्यवहार सबके साथ मीठा हो जाता है। कभी किसी से नाराज़गी नहीं, तू मैं, तेरा मेरा नहीं, एकदम फ्री है क्योंकि बच्चा है।

अमृतवेले बच्चे हैं, क्लास में स्टूडेंट हैं, दिन में कर्मयोगी हैं। बच्चा है, जवान है, बूढ़ा है, हर एक को कर्म करना ही है। कर्मों की गुह्यगति को जान, बॉडी कॉन्सेस को छोड़, मैं आत्मा परमात्मा का बच्चा हूँ, इस नशे में रह विजयी रत्नों में आने के लिए, मायाजीत बनने के लिए युद्ध के मैदान में हैं। पता है माया का, उसे जैलसी होती है हम प्रभु के प्यारे बने हैं तो उसे सहन नहीं होता है, कोई न कोई तरीके से बाबा के बच्चों के पीछे

पड़ती है। परन्तु समझदार बाबा का बच्चा माया... बाबा... हम हैं कौन? हम किसके बच्चे हैं? क्या बन गये हैं? किसने बनाया है? सारे संसार में हमारे जैसा कोई नहीं। हमारा फ्यूचर क्या है, वह फीचर्स से दिखाई दे। राज्य पद पाने का ख्याल जरूर रखना है और छोटी-छोटी बात की भी गलती हमारे से न हो। अलबेले वा सुस्ती के कारण एक बारी थोड़ी गलती हुई वो फिर स्वभाव बन जाता है। माया ऐसी है, जब ऐसी कोई गलती होती है ना, तो फिर बार बार वो होती रहती है। देखती है, अभी चांस मिला है तो फिर कोई न कोई बात के कारण... माया बार-बार हार खिलाती रहेगी।

जैसे बाबा ने कहा ज्ञान गुप्त है, देने वाला भी गुप्त है, ऐसे ही धारणा भी गुप्त करना है। तो धारणा अन्दर गुप्त हो गई, तो परखने की शक्ति, निर्णय शक्ति ऑटोमेटिक सभी शक्तियाँ सेवा में साथ देती है। सेवा छोड़के कोई मायाजीत नहीं बन सकता है, सेवा में सम्बन्ध है सबके साथ। सेवा में अनासक्त वृत्ति, डिटैच और लविंग नेचर हो। नहीं तो हठयोगी नेचर हो जायेगा। कहाँ हमारे कर्मयोगी के संस्कार! इसलिए गुरु या फॉलोअर नहीं बनना है। हम बच्चे हैं वो मेरा बाबा है आपस में बहन भाई हैं। नाम कहा जाता है दादी या दीदी, पर काम तो हरेक दादी दीदी का कर सकते हैं। मैंने कोई ऐसा दादी बनने का पुरुषार्थ नहीं किया है, मेरे को किसी ने पूछा कि यहाँ किसी-किसी को ही दादी वा दीदी कहा जाता है तो उसके लिये क्या पुरुषार्थ है उन्हों का? मैंने तो कभी समझा ही नहीं मुझे कोई दादी कहेगा या दादी कहे, इच्छा नहीं थी, अभी कहते हैं तो कहती हूँ ठीक है माना सत्यता नम्बरवन, धैर्यता, गम्भीरता, मधुरता हो।

दादा माना क्या? नेचर में गम्भीरता हो, मधुरता हो, मीठा बोले, जहाँ भी है किसी हालत में भी कभी मूड खराब न हो, नहीं तो वो दादा दादी नहीं बन सकता। यह कोई टोपी नहीं है जो बाबा ने कहा सेवा के ख्याल से, कोई शान मिला, मान मिला यह अभिमान की निशानी है। देही-अभिमानी स्थिति हो एक बाबा दूसरा न कोई। तीसरा यज्ञ बाबा का है, भाग्यवान आत्मा हूँ जो यज्ञ का खाने को मिला है, यज्ञ सेवा का भाग्य मिला है। यज्ञ का खाया है तो एक एक दाना मुहर बराबर है, ऐसा भोजन सारे कल्प में नहीं मिलेगा, भले सतयुग में 36 प्रकार के भोजन खायेंगे पर यहाँ जो भोजन मिलता है, ब्रह्माभोजन बनाने वाले ब्राह्मण।

कभी देखो तो बहुत अच्छा मूड, कभी देखो तो कैसा... गीता में भी है मूडमति बाप को नहीं पहचानते हैं, जो बाप को पहचानते हैं वह एक बाबा को ही देखते हैं और किसी को भी नहीं देखते। क्या देखें, हाँ मेरे बहन भाई हैं, कोई अच्छा है या

बुरा है, किसने कहा यह बुरा है? यह एक सूक्ष्म संकल्प हमारी ऊंची स्थिति बनने में एक प्रकार से रूकावट डालता है। किसी घड़ी भी मैं प्रसन्नचित नहीं हूँ तो बाबा ने कहा सूक्ष्म कोई ईर्ष्या है। इसको अच्छा पोजीशन मिलता है, मेरे को नहीं मिलता है, सूक्ष्म सन्तुष्टता नहीं है। अरे, पा लिया जो पाना था काम क्या बाकी रहा, इतना मिला है ना! वो मिलन का अनुभव हमारी पर्सनालिटी में सदा ही देखो। जवाब निकलता है एक बाबा की मदद है, दूसरा हुआ ही पड़ा था, बाबा ने निमित्त बनाया। यज्ञ की हिस्ट्री में कहाँ से कहाँ पहुँचे हैं, कराया बाबा ने है। बाबा सारी विश्व को अपना बना करके, बाबा की जो मुस्कराहट है वैसे मुस्कराना सिखा दिया है। बाबा की मुस्कराहट को अच्छी तरह से देखो, वन्दरफुल मुस्कराहट है।

बाबा कितनी प्यार से हमारी पालना करता है, जो हमारे में कोई कमी रह न जाये। हर एक बच्चा मायाजीत, विकर्माजीत हो। कभी भी थोड़ी हार खायेंगे तो दिल में धड़कन होगी, चलन और चेहरे से जो हार खाने की... फिर अन्दर से यह भी आता है कि मैं कोशिश बहुत करती हूँ परन्तु यह भी न ख्याल आये। ईश्वरीय कशिश की खींच से, आत्म-अभिमानी स्थिति भाई-भाई की दृष्टि महासुखकारी है। सहयोग देना, सहयोगी रहना नेचुरल है। जहाँ जहाँ सेवा है, मैं हाज़िर हूँ। बाबा के महावाक्य सत् वचन महाराज। हज़ूर सदा साथ में हाज़िर है, अकेली नहीं हूँ। वैसे गुल्ज़ार दादी सदा ही कहती है कम्बाइण्ड समझो, चाहे सेवा में चाहे योग में, योग लगाओ तो और कोई याद थोड़ेही आता है, शक्ति मिल रही है। तो याद में चाहे योग में, चाहे सेवा में साथी हैं, योग के समय सामने हैं, याद में परिपक्व अवस्था बना रहा है। कोई और बात याद नहीं आती है तभी अवस्था परिपक्व बनती है। तो बार-बार यह नेचुरल अभ्यास हो जाये, बुद्धि शान्त, भले सुन रहे हो अन्दर शान्ति का अनुभव हो, यह स्वाभाविक हो जाये।

तो बाबा ने कहा खुशी खजाना है और साथ में खुशी खुराक भी है। खुराक खाने के लिए चाहिए, खजाना सेवा के लिए चाहिए। खजाना होगा तो दानी महादानी फिर वरदानी बन सकेंगे। किसी भी कारण से थकना नहीं क्योंकि सेवा में जो खुशी है, सेवा में जो शक्ति है, कदम कदम पर पदमों की कमाई है। तो जो जरूरी है वो मिस न हो। यज्ञ सेवा में हड्डी सेवा के साथ मधुरता जरूर चाहिए क्योंकि उसमें सेवा से किसी और को थोड़ा भी दुःख होता है, कोई प्रकार का भी तो वह जाता नहीं है। कोई भी बीमारी का कारण है - दुःख, चिन्ता, भय और बीमारी को भगाने का साधन है - सच्चाई, प्रेम, विश्वास। डरने की कोई बात नहीं, भले शरीर छूट जाये पर सच्चाई और प्रेम से कोई चिन्ता फिकर की बात नहीं है।

तो पहले समेटके, समाके कोई बैंक में पड़ा है, कोई मकान में पड़ा है तो बुद्धि लटकी चटकी है, नहीं चाहिए ऐसा खाली हाथ.. जैसे अर्थी निकालते हैं हाथ खाली है। जब ऊपर से आते हैं माँ की गर्भ से निकलते हैं तो कुछ लेके आते हैं? पर संस्कार ले आये अभी संस्कार हमारे शान्तिधाम जाने के, सतयुग में आने के संस्कार बन रहे हैं। हर जन्म जो भी लिया है पास्ट के संस्कारों अनुसार लिया है, अभी हमारा अटेन्शन है सारा। हमको तो यही फिकर है, धीरज चाहिए, थोड़ा भी

अधैर्यता का संस्कार न हो। थोड़ा भी बोल में या संकल्प में जल्दी नहीं बोलो। शान्ति से अपने आप सब बहुत अच्छा ठीक हो जाता है। शान्त में रहने की टेव पड़ जाये, जहाँ जहाँ बैठें वहाँ शान्त हो जायें, दूर बैठे भी सबको वायब्रेशन मिलें। तो शान्ति माना सुख-शान्ति, प्रेम-आनंद। बाबा तो इन सब बातों का सागर है, बाबा कहते तुमको सागर स्वरूप बनना है। तो अन्दर शान्ति से काम लेना, शान्ति माना क्यू में खड़ा रहना न पड़े। शान्ति माना आवाज़ कम, काम अच्छा एक्यूरेट। अच्छा।

दूसरा क्लास

“निश्चय में विजय है, सफलता में भावना है, कोई परिस्थिति डोलायमान कर नहीं सकती”
(दादी जानकी)

गीत बनाने वाले, गाने वाले या सुनने वाले किसको थैंक्स दूँ। बाबा की मुरली में जादू है। कितना प्यार है मुरली के साथ।

बाबा मेरे से क्या चाहता है? प्रसन्नचित्त रहना है, प्रश्नचित्त नहीं बनना है। दो शब्दों में ही अपने आपको देखो, मैं प्रसन्नचित्त हूँ? बाबा तेरे दरबार में पा लिया.. क्या पाया है? बच्चे कहेंगे पा लिया जो था पाना, काम क्या बाकी रहा। कोई क्वेश्चन ही नहीं है। इतना मिला है जो कोई कमी नहीं है इसलिए प्रसन्नचित्त हैं। हमारा गीत है ना - इस पाप की दुनिया से दूर कहीं ले चल, चित्त चैन जहाँ पाये। मन चित्त में भी नहीं था हमको इतना मिलेगा। जितना मिलता है, दान करने से बढ़ता है। तो भगवान ने यह सिखाया है मांगो नहीं, बिना मांगे मोती मिले। अभी तो प्रत्यक्षफल मिला है, जन्मते ही मिला है। बाबा से जन्म लिया, बाबा को देखा, तब से लेकरके कितना मिला है। अचल अडोल स्थिति बन गई है। वे कोई परिस्थिति में डोलायमान, चलायमान नहीं होते। अगर एक बार हुए तो आदत पड़ जायेगी। इतना निश्चय का नशा है, निश्चय में विजय है। अन्दर से आत्मा को लगता है एक है विजय, दूसरा तन मन धन से समर्पण हुए हैं। समर्पण हैं माना अन्न अच्छा मिला, जैसा अन्न वैसा मन। जैसा संग वैसा रंग। पहले-पहले कहते थे जो अन्दर जाता है वह वापस नहीं आता है। चित्त चैन जहाँ पाये दूर वहीं ले चल। ऐसी मीठी मीठी प्यारी प्यारी बातें बाबा की अन्दर में घुस गई हैं। अभी हम कहते नहीं हैं ले चल, वह पार लेकर जा रहा है।

बड़ी खुशी की बात है, समय, संकल्प, सम्पत्ति सब सफल हुआ है। समर्पण का बहुत समारोह मनाते हैं परन्तु समय संकल्प सम्पत्ति सब सफल किया है! निष्फल एक कौड़ी न जाए, एक मिनट न जाये। यह बहुत वैल्युबुल है। तो चेक करो, सी फादर फॉलो फादर। और कुछ भी करने नहीं आवे तो सी फादर फॉलो फादर करो। जैसे बाबा की दृष्टि वन्दरफुल है। बाबा मुरली सबके लिए चलाता है। गोल्डन जुबली प्लैटिनम जुबली सिर्फ हमारी नहीं हुई, सबकी हुई है। अभी हम सब एवररेडी हैं, अचानक कुछ भी हो जाए।

भगवानुवाच है लास्ट सो फास्ट, फास्ट सो फर्स्ट जा सकते हैं। परमात्मा कौन, क्या करता है, कैसे करता है। बाबा ने बच्चों को ऐसे सम्भाला है। जैसा बीज वैसा फल। निश्चय का बीज पड़ा है, विजय हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है। सफलता हमारा बर्थ राइट है। इतना निश्चय में विजय है, सफलता में भावना है। होगा या नहीं, हो जायेगा। कईयों की चलने वाली बुद्धि होती है तो भावना और निश्चय को समझ नहीं सकते।

इकॉनामी और एकनामी एकाग्रता, एकता की कमाल है। इकॉनामी अच्छी तरह से हो एक पाई भी व्यर्थ न जावे। खाना बनाना खिलाना, बर्तन साफ करते एक अनाज का दाना भी नाली में न जावे। अन्न का एक एक दाना भी कीमती है। किसका खाया है। जिससे प्यार होता है, वही नज़रों में दिखाई देता है।

“स्व-परिवर्तन और स्वमान यही दो शब्द आगे बढ़ने का आधार हैं”

(दादी गुल्जार)

कोई भी क्लास होता है, उसमें सब बातें तो अच्छी होती हैं लेकिन सब याद न भी रहें सिर्फ कोई एक बात को लक्ष्य बनाओ कि एक बात ध्यान में रख करके वह करना ही है। यह नहीं, कोशिश करेंगे। कोशिश माना कुछ कमजोरी है तभी कोशिश कहते हैं। जब अच्छी बात है और हमको सम्पन्न बनना ही है तो करना ही है। सभी को सम्पूर्ण बनना है या नम्बरवार? क्या बनना है? बाबा के समान सम्पूर्ण और सम्पन्न बनना है ना।

तो जो गायन है निश्चय बुद्धि विजयी। तो कोई भी कमजोर संकल्प उत्पन्न ही न हो। कई बार हमको अपने में ही कमजोर संकल्प उत्पन्न होता है कि पता नहीं कर सकेंगे, नहीं कर सकेंगे। फिर भी देखूंगी, सोचूंगी, करूंगी... तो अपने में ही जब संशय है तो विजय कैसे होगी। तो कभी भी यह नहीं सोचना चाहिए कि कर सकूंगी, नहीं कर सकूंगी, यह माया रुकावट डालती है और हम उसके वश हो जाते हैं, अपने में ही संशय आ जाता है।

तो पहला है - स्व में सम्पूर्ण निश्चय हो। कोई भी काम करो लौकिक करो या अलौकिक लेकिन जब तक यह नहीं है “करना ही है”, मर जायेंगे, मिट जायेंगे लेकिन करना ही है इतना जब अपने में निश्चय होगा फिर न हो, यह हो ही नहीं सकता है। अपने में ही थोड़ा-थोड़ा संशय, संशय शब्द थोड़ा भारी कहती हूँ लेकिन कमजोर संकल्प क्यों, क्या, कैसे होगा, पता नहीं.. यह पता नहीं बहुत आता है। तो इस प्रकार से अपने में ही कमजोर संकल्प नहीं लायें या तो पता नहीं आता है या तो कहते हैं - देखेंगे, करेंगे, हाँ ध्यान पर है। क्या ध्यान पर है? ध्यान पर है तो कर्म में भी आवे ना। नहीं तो ऐसे ही कहते हैं ध्यान पर है, अगर ध्यान पर है तो उसका पुफ क्या? जब मेरे मन और बुद्धि में है तो कर्म में भी आयेगा ही। अगर मन में संकल्प है, बुद्धि में जजमेन्ट भी है कि करना ही है, तो कर्म में कैसे नहीं आयेगा। जरूर मन और बुद्धि में अर्थात् संकल्प में कमजोरी है। तो जब कोई कमजोर संकल्प आये तो उस समय सोचना मैं संशय बुद्धि हो रही हूँ। बाबा में तो संशय नहीं आ सकता है। वह तो पक्का हो गया। अपने में आ जाता है, परिवार में आ जाता है। इन दो बातों में आ जाता है। ड्रामा में भी कभी-कभी आ जाता है क्यों, क्या, कैसे...! बाकी बाबा में पक्का निश्चय है। तो जैसे बाबा में पक्के हो वैसे हर बात में

पक्के हो जाना।

एक बात याद रखना - स्व में निश्चय, निश्चय बुद्धि विजयी। बस। हर काम में विजय हो, यही सभी की चाहना होती है तो हर घड़ी यह स्मृति रहे कि मेरी विजय हुई पड़ी है, यह निश्चय पक्का हो। इसके लिए दो शब्द कभी नहीं भूलना एक “स्व परिवर्तन” और दूसरा “स्वमान।” इसके लिए पहले अपने मन बुद्धि को ठीक रखो। यह बदले तो मैं बदलूँ, मेरा सेन्टर बदल जाये या यह बहन ट्रांसफर हो जाये तो मैं बदलूँ माना स्व-परिवर्तन भूला हुआ है। यह नहीं सोचते कि मैं अपने को बदलूँ। अपने तरफ ध्यान कम जाता है। जैसे नदी कैसे भी करके अपना रास्ता बदली करके चली जाती है और सागर में समा जाती है। नदी कभी भी रुकती नहीं है, अपना किनारा बदली कर देगी लेकिन रूकेगी नहीं। लेकिन हम अटक जाते हैं, यह हो तो, ऐसा हो तो... यह नहीं। हमको स्व परिवर्तन करना है, अपना रास्ता बदलना माना अपने जो संस्कार हैं उसको बदलना है। फिर देखो कहाँ भी रहो, बहुत मजा आयेगा। यह आप पक्का कर लो कि जिस स्थान पर आप जायेंगे वही पेपर हॉल है। अगर स्व परिवर्तन का लक्ष्य नहीं है तो हर स्थान पर पेपर आयेगे और आप फेल होंगे। अरे! 21 जन्म की बादशाही यूँ ही मिल जायेगी क्या! सोचो तो सही। के.जी.क्लास में भी पास होने का पेपर होता है और यहाँ 21 जन्म का राज्य भाग्य मिलता है, कोई कम है क्या? बिना पेपर के कैसे होगा? पेपर तो जहाँ तहाँ आयेगा।

तो सेन्टर ही हमारे लिए परीक्षा हॉल है और सेन्टर के साथी ही हमारे पेपर हैं। कोई कितना भी बदली करें लेकिन कभी सन्तुष्ट नहीं होंगे। हमको बदलना है, स्व-परिवर्तन से विश्व परिवर्तन। दूसरे के परिवर्तन से विश्व का परिवर्तन नहीं कहा हुआ है। मुझे क्या करना है वह सोचना चाहिए। तो पहले चाहिए स्वमान। अपना स्वमान ही नहीं है तो पेपर क्या देंगे, जरूर फेल होंगे। स्वमान और स्व परिवर्तन यह दो शब्द अमृतवेले अपने लिये हमेशा रिवाइज़ करो। सारे दिन में देखो स्वमान रहा! स्व परिवर्तन किया या पर परिवर्तन का सोचा? हाँ कोई बात है, बड़ों को दे दिया वह बात दूसरी है, परन्तु वह भी शुभ भावना से दो। तो ऐसे पुरुषार्थ करके आगे बढ़ना। अच्छा - ओम् शान्ति।

स्वीट बाबा के स्वीट बच्चे अपनी स्वीट स्थिति बनाओ, मायाजीत, व्यर्थ संकल्प जीत विजयी बनो

हम सब बाबा के समर्पित बच्चे बैठे हैं, समर्पित माना न तो मनमत चाहिए, न परमत चाहिए। समर्पण माना कदम-कदम बाबा की जो श्रीमत है, उसका ध्यान रख चलना। यह भी जो कभी कहते हैं कि हमारे व्यर्थ संकल्प चलते हैं... तो जब हम समर्पण हैं तो संकल्प भी बिल्कुल श्रेष्ठ हो, न कि व्यर्थ क्योंकि समर्पण माना समर्थ संकल्प। तो जब संकल्प भी समर्थ हों, स्थिति भी हमारी इतनी ही ऊंची समर्पणमय वाली हो। कभी यह सूक्ष्म में भी संकल्प न आवे जो यह कहो कि बाबा मेरे पास माया बहुत आती है। जब जानते हो कि यह माया है तो जानने वाला नॉलेजफुल अगर कहे कि मेरे पास माया आती है, तो वे समर्पण नहीं हुए। हम सभी का रिकार्ड हो, समर्पण माना संकल्प भी मायाजीत के हो। हरेक खुद से पूछे मैं मायाजीत हूँ या माया के वश होता हूँ? अगर माया आती है तो फिर बाबा के प्रति समर्पित कैसे हुए?

समर्पित माना कर्म, अकर्म, विकर्म की गुह्यगति को जानने वाले अर्थात् विजयी। जानने वाला अगर कहे कि मेरे से आज यह विकर्म हो गया, भूल हो गई तो उस विकर्म का कितना बड़ा दण्ड हो जाता है, जिस पर कहा जाता है ज्ञानी तू आत्मा को एक भूल का 100 गुणा दण्ड मिलता है। हम सब ज्ञानी तू आत्मायें, श्रीमत पर चलने वाले यहाँ बैठे हैं। श्रीमत अर्थात् सदा यह याद रहे कि हम तो निमित्त मात्र हैं, करने कराने वाला बाबा है। निमित्त मात्र की स्थिति स्वयं को माया से बहुत-बहुत सेफ रखती है। जैसे बाबा ने कहा निरहंकारी बनो, तो निमित्त मात्र समझकर चलने से निरहंकारी स्थिति का अनुभव सहज होता है। निमित्त पन का भाव ही अहम् पर विजय दिलाता है अर्थात् निरहंकारी बना देता है। मैं मैं खत्म हो जाती है। बाबा, बाबा, बाबा आता। तो जहाँ बाबा बाबा आता वहाँ हर कर्म सहज अकर्म हो जाता। जहाँ अहम् आता वहाँ कर्म का खाता बनता। बाबा तो करने कराने वाला हुआ, हम निमित्त हैं। तो जो कर्मों का हिसाब लेना देना है, वह चुक्त्तू हो जाता है इसलिए इसका नाम है समर्पण। न कोई कर्म मेरा है, न मैं करता हूँ। बाबा कराता है, जो बाबा कहे सो करना है।

तो जब बाबा कराता है तो फिर जो बीच में कहा माया आती, वह माया खत्म हो जाती है। कई पूछते हैं व्यर्थ संकल्प बहुत आते हैं, क्या करूँ? तो पहले हम उनको कहते अपने से पूछो कि क्या मैं समर्पण हूँ? जब हूँ ही समर्पण तो मेरे पास माया के संकल्प विकल्प भी क्यों आवें, जो कर्म में आऊँ। तो न ऐसा कोई कर्म होगा, न विकर्म होगा, न माया आयेगी, सहज मायाजीत बन जायेंगे। ऐसे मायाजीत रहने वाला सदा अपने कर्मों से दूसरों को भी प्रेरणा देगा क्योंकि उनको यह ध्यान है जैसा कर्म मैं करूँगा मुझे देख दूसरे करेंगे। तो अगर हम सोचें कि हम निमित्त हैं - बाबा के हजारों बच्चों को अपनी धारणा से प्रेरणा देने के, तो समझो हम समर्पित हैं। अगर अभी भी माया है तो वह खुद भी दोषी बनता, दूसरों को भी ऐसा कर्म करने की प्रेरणा दे देता तो उनका भी डबल दोषी बनता है इसलिए हम सब जो भी बाबा की सेवा पर हैं, हर एक जिम्मेदार हैं अनेकों को प्रेरणा देने के।

तो बाबा ने हमें काम दिया है - मायाजीत बनने के लिए निराकारी स्थिति बनाओ। फिर निरहंकारी और निर्विकारी बनो...। तो हरेक को अगर मेहनत करनी है, पुरुषार्थ करना है तो कर्मातीत बनने के लिए हमें निराकारी स्थिति की बहुत मेहनत करनी है क्योंकि निराकारी स्थिति ही हमें सहज कर्मातीत बनायेगी। निराकारी स्थिति के अन्दर हमारे तीन बड़े राज हैं। एक तो निराकारी स्थिति स्वयं के भी संस्कारों पर सहज विजयी बना देती है। दूसरा - हमारी निराकारी स्थिति वायुमण्डल, वातावरण में भी शान्ति की शक्ति फैलाती है। तीसरा - निराकारी स्थिति हमें सम्पूर्ण निर्विकारी बना देती है। तो यह स्थिति कर्म, विकर्म पर विजय प्राप्त कराके अकर्म बना देती है। तो हम सभी को अपने स्थिति का रिकॉर्ड रखना है कि बाबा हमने व्यर्थ संकल्पों पर भी विजय पाई है। यह नहीं, बाबा पुरुषार्थ तो करते हैं परन्तु फिर भी व्यर्थ संकल्प बहुत आते हैं। अगर ऐसी स्थिति है तो समर्पण नहीं है। वह श्रीमत पर नहीं, मनमत पर हैं। अच्छा।

ओम् शान्ति।